बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्
सम्मेलन-भवन, पटना-३

अपने और सपने

चम्पारन की साहित्य यात्रा

रमेशचंद्र झा

अपने और सपने

[चम्पारन की साहित्य-यात्रा]

रमेशचन्द्र झा

कृतज्ञता ज्ञापन

चम्पारन की साहित्य यात्रा के प्रकाशन-यज्ञ की पूर्णाहुति के लिए साकल्य, अक्षत-पुष्प चन्दन देनेवाले सर्वश्री शम्भुनाथ डौलिया, वाणिज्य प्रबन्धक, बगहा चीनी मिल, बगहा, एस० एन० पोद्दार, महाप्रबन्धक हरिनगर चीनी मिल, हरिनगर, राष्ट्रीय हिन्दी महाविद्यालय, (हिन्दी विद्यापीठ, देवघर से सम्बद्ध) बेतिया, डॉ० शशिभूषण प्रसाद वर्मा, अध्यक्ष, चम्पारन शिक्षा प्रतिष्ठान (रगनीता) हरदिया, श्रावन्ती निलयम्, सुगौली, बुद्धिजीवी मंच, बगहा, राजेन्द्र 'विहारी' प्रेस संचालक, नरकटियागंज, नरेन्द्रबहादुर सिंह, नारायणपुर, बगहा; डॉ० श्री० डी० शिन्दे, रक्सौल के प्रति हमारी ओर से आत्मिक कृतज्ञता ज्ञापन।

★

आगामी कृति

अपने और सपने

साहित्यिक संस्मरण

★

प्रकाशक—सहयोगी प्रकाशन, सुगौली, पूर्वी चम्पारन। मूल्य—पच्चीस रुपये प्रकाशन वर्ष—वसन्त पञ्चमी–२०४४ वि० १९८८ ई० मुद्रक—कल्पना प्रेस, रामकटोरा रोड, वाराणसी।

प्राप्ति स्थान ● रूपालय पुस्तक केन्द्र, बगहा।
● विद्यार्थी बुक स्टोर, मीना बाजार, बेतिया।
● किताब केन्द्र, रक्सौल।

मेरे बाद की पीढ़ी

चम्पारन के कवियों गीतकारों को वे सभी स्थितियाँ सुलभ हैं, जो अनुप्रेरित करती है गीतों और कविताओं की संरचना के लिए। वे परिस्थितियाँ भी सामने हैं जो विवश करती हैं विद्रोह और संघर्ष के लिए। इस सन्दर्भ का आरम्भ श्री गणेश पाठक (पटखौली) से करने दिया जाय। गणेश पाठक ने एक मौन साधक का जीवन जीते हुए लम्बी काव्य यात्रा की है। भाषा और काव्य-शिल्प की दृष्टि से गणेश पाठक अलग दीखते हैं। एक छन्द प्रस्तुत है—

"वैभव के बन्धन में मत बाँधो कवियों को
वे नील गगन के पन्छी हैं, उड़ जाने दो ;
मत बाँधो उनकी गति सोने की डोरी से
तिनकों से अपना प्यारा महल सजाने दो !

गणेश पाठक ने कल्पनाओं के तिनके से जो आलीशान महल बनाया, उसे एन्थोनी दीपक (रामनगर) ने मधुर अनुभूतियों, नये विचारों से सँवारने का प्रयास किया। एन्थोनी 'दीपक' की रचनाओं के दो संग्रह 'परिचय' और 'दीपक के गीत' प्रकाशित हुए। धरती के सजाने-सजने की आकांक्षा लिए दीपक ने कहा—

तुम चाह रहे धरती पर स्वर्ग उतर आए,
मैं चाह रहा धरती ही सजे सँवर जाए !
कण-कण का रूप निखर जाए !
सुषमा की रानी नित करती अठखेली है,
नन्दन कानन की घटा बड़ी अलबेली है।
हीरे मोती हैं खिले कल्प की डाली में
सपनों का यह जग सुन्दर एक पहेली है !

एन्थोनी 'दीपक' ने कई विधाओं में रचनायें की हैं।

दीपक ने एक खण्ड-काव्य 'ताज' (अप्रकाशित) लिखा और अपनी खुली आँखों से ताजमहल को देखने का प्रयास किया। पाण्डेय आशुतोष (ज० १९३६, मलकौली: बगहा) ने नये संकल्प, नए परिवेश के साथ काव्य की कई नई विधाओं को अपनी सशक्त रचनानों से अलंकृत किया। इस प्रकार कभी पौरुष की आरती उतारी, कभी

जीवन का अर्चन-वन्दन किया। कभी मेजर रणजीत सिंह दयाल का नमन किया, कभी विद्रोही कवि काजी नजरुल इस्लाम को सलाम किया तो कभी प्रलयंकर शिवशंकर को प्रणाम किया। तात्पर्य कि पाण्डेय आशुतोष ने अपनी रचनाओं के माध्यम से हिन्दी काव्य को आलोकित किया फिर नए तेवर की गजल की ओर आए। कुछ पंक्तियाँ प्रस्तुत हैं—

"आइए, एक पल के लिए!
मृग न मर जाए जल के लिये!
ज्वार तट पर गया फेंक कर,
जो थे मोती अनल के लिए!
मौत की ठीक पहचान हो,
है कठिन आजकल के लिए!
आप सबकी दुआ चाहिए,
अपनी नन्हीं गजल के लिए!

नव गीत अन्वेषक राजेन्द्र प्रसाद सिंह के अद्यतन नवगीत संकलन 'नवगीत सतदशक' में संकलित पाण्डेय आशुतोष के साहित्यिक संस्मरण राष्ट्रीय स्तर की पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे हैं। कई राष्ट्रीय स्तर के काव्य संकलनों में आशुतोष जी की रचनायें प्रकाशित हैं। सत्यनारायण द्वारा सम्पादित तथा पारिजात प्रकाशन की ओर से प्रकाशित काव्यसंकलन 'धरती से जुड़कर' उनमें से एक है। नए तेवर की गजल की कुछ पंक्तियाँ—

करूँ तुंग को पार अपने चरण से!
दो आशीष तुम अपने अन्तः करण से!
धरा मेरी माँ है, इसे पूजता हूँ,
अपावन करो मत दुषित आचरण से!

पाण्डेय आशुतोष ने अपनी रचनाधर्मिता के बल पर अपना आकाश बनाया, अपनी जमीन बनायी। कुछ ऐसी ही जमीन की कल्पना और संरचना दिनेश भ्रमर ने की। दिनेश भ्रमर (पटखौली : बगहा) ने भी अपनी काव्य साधना से हिन्दी काव्य धारा को नयी लहरों से आलोकित किया। हिन्दी गीतों को मौलिक आधार देते हुए नया आयाम दिया, नयी दिशा दी। भ्रमर जी के गीतों का एक संग्रह 'गीत मेरे : स्वर तुम्हारे' प्रकाशित है लेकिन यही काव्य कृति भ्रमर जी की रचनाओं का प्रतिनिधि संकलन नहीं है। प्रतीक्षा की जा रही है नये संकलन की।

दिनेश भ्रमर ने जीवन-यौवन के गीत गाए और अपनी पलकों की कोर से असीम आकाश को मापते हुए भूमि के गीतों के साथ ही आकाश के गीत भी गाये। दिनेश भ्रमर की अपरिमित रचनायें राष्ट्रीय स्तर के काव्य संकलनों के माध्यम से प्रकाशित हुई। नए प्रयोग, नयी अभिव्यक्तियाँ भ्रमर जी की रचनाओं की मूल धारा है। कुछ जीवन्त पंक्तियाँ प्रस्तुत हैं —

अपने मिलते हैं अजनबी की तरह;
जीना मुश्किल है आदमी की तरह!
कब सहारे की बात की तट ने,
मैं तो बहता रहा नदी की तरह!
देवता था किसी की नजरों में,
आज भिक्षुक हूँ भरथरी की तरह!

दिनेश 'भ्रमर' ने समाज के परिवेश को समीप से देखा-परखा तो एक तस्वीर उतरी—

कहीं सावन कहीं गगन बरसे!
जाने किस याद में नयन बरसे!
क्या हो साकार स्वप्न समता का
कहीं माटी, कहीं रतन बरसे?
याद की गंध महक बूँदों की
ऐसा लगता है ज्यों अगन बरसे!
नीले आँचल में चमक सन्दल की
मानो आकाश से किरण बरसे?
काली अलकों से सरकती बूंदें,
जैसे थम-थम के कोई घन बरसे!

इसी तेवर में दिनेश भ्रमर ने भोजपुरी में भी गजलें लिखी हैं। हिन्दी की प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में वे प्रकाशित होती रही हैं। इसी पीढ़ी के डॉ० अखिलेश्वर प्रसाद 'अखिलेश' (बेतिया) ने अपनी विभिन्न विधाओं की रचनाओं से हिन्दी काव्य धारा को समलंकृत किया। हमारी भूमि के स्वनिर्मित कवि व्यक्तित्व राजेन्द्र 'अनल' (बेतिया) की काव्य-यात्रा से उल्लेखनीय अवदान सुलभ हुए। अनल जी की लेखनी कभी गद्य लिखती रही, कभी पद्य और इस प्रकार काव्य की अनेक विधाओं में आपने अपनी शुद्ध